144 खंभे बनाए गए हैं संसद की पहली मंजिल पर। इस भवन की गोलाकर संरचना निरंतरता की प्रतीक है, यह संरचना यह दर्शाती है यह सत्ता बनी रहेगी और कभी खत्म नहीं होगी।

संसद और मुंबई हमले के बाद भी एयरस्ट्राइक को तैयार थी वायुसेना

- पूर्व वायुसेना प्रमुख धनोआ ने कहा, तत्कालीन सरकारों ने नहीं दी अनुमति
- पुलवामा के बाद सरकार ने फैसला किया, हमने बालाकोट को अंजाम दिया

नई दिल्ली, एजेंसियां : पूर्व वायुसेना प्रमुख बीएस धनोआ ने शनिवार को कहा कि 2001 में संसद पर और 2008 में मुंबई में हुए आतंकी हमले के बाद भी पाकिस्तान के आतंकी शिविरों पर हवाई हमला करने के लिए वायु सेना तैयार थी, लेकिन तत्कालीन सरकारों ने उसकी अनुमति नहीं दी। वह वीजेटीआई के वार्षिक समारोह 'टेक्नोवंजा' को संबोधित कर रहे थे।

धनोआ ने कहा कि दिसंबर, 2001 में संसद पर आतंकी हमले के बाद वायुसेना ने पाकिस्तान के आतंकी शिविरों को ध्वस्त करने की योजना तैयार की थी, लेकिन तत्कालीन सरकार ने उसे स्वीकार नहीं किया। दिसंबर, 2008 में मुंबई में आतंकी हमले के बाद भी तत्कालीन वायुसेना प्रमुख गुलाम कश्मीर में मौजूद आतंकी शिविरों पर हमला करने के लिए तैयार थे, लेकिन उसकी अनुमति नहीं दी गई। उस समय तकनीकी रूप से वायुसेना पाकिस्तानी वायुसेना से मजबूत स्थिति में भी थी। पूर्व वायुसेना प्रमुख ने कहा कि पुलवामा में सेना के काफिले पर आतंकी हमले के बाद वायुसेना पाकिस्तान के बालाकोट में आतंकी शिविरों पर हमला करने में इसलिए सफल रही क्योंकि सरकार ने इसका फैसला किया। उन्होंने कहा, 'इस बार राष्ट्रीय नेतृत्व ने फैसला किया और हमने उसे अंजाम दिया।' धनोआ ने कहा कि पाकिस्तान कश्मीर मुद्दे को खत्म नहीं होने देगा, क्योंकि इससे उसे कई लाभ मिलते हैं। पाकिस्तान झूठ फैलाने में लगा है और वह कश्मीर में हमले जारी रखेगा।

बीएस धनोआ। फाइल

बता दें कि धनोआ 31 दिसंबर, 2016 से 30 सितंबर, 2019 तक वायुसेना प्रमुख रहे थे। उन्होंने कहा कि भारत के पास जमीन, आकाश और समुद्र से परमाणु हमला करने की क्षमता है।

पूर्व वायुसेना प्रमुख ने कहा कि हमारे पड़ोस में दो परमाणु शक्ति संपन्न देश पाकिस्तान और चीन मौजूद हैं। चीन ने अपनी वायुसेना को अत्याधुनिक बना लिया है। उसने तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र में व्यापक पैमाने पर वायुसेना की तैनाती भी की है। वह दक्षिण चीन सागर में भी अपनी ताकत बढ़ाने में लगा है, उसने ऐसे युद्धपोत बनाए हैं जो डूब नहीं सकते।

सोशल मीडिया पर ज्ञान साझा करेंगे केंद्रीय विवि

गुरुदीप त्रिपाठी, प्रयागराज : दुनिया में ज्ञान और सूचनाओं को आपस में साझा करना बहुत महत्वपूर्ण है और इस कार्य के लिए सोशल मीडिया भी एक बेहतर प्लेटफार्म हो सकता है। ऐसे में मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने इस दिशा में अहम निर्णय लिया है कि देशभर के सभी केंद्रीय विश्वविद्यालय अब सोशल मीडिया पर अपनी सक्रियता बढ़ाएंगे। इसमें सभी तकनीकी संस्थानों को भी शामिल किया गया है।

दरअसल, मंत्रालय ने लंबे समय से यह नई योजना बनाई थी। उसे मूर्त रूप देने के लिए इस मसले पर शुक्रवार को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें देशभर के केंद्रीय विश्वविद्यालयों एवं तकनीकी संस्थानों के करीब 200 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इसका उद्घाटन केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने किया। कार्यशाला में बताया गया कि वर्तमान में यह जरूरी हो गया है कि अपने ज्ञान और सूचनाओं को आपस में साझा किया जाए, ताकि सभी छात्र-छात्राएं इसका लाभ उठा सकें। इसके लिए आवश्यक है कि हर संस्थान विभिन्न मीडिया मंचों के माध्यम से अपने अच्छे कार्यों का प्रचार करे।

आज हेमंत लेंगे झारखंड के सीएम पद की शपथ

- कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष रामेश्वर उरांव भी लेंगे शपथ
- खरमास के बाद विस्तार में जोड़े जाएंगे अन्य मंत्रियों के नाम

राज्य ब्यूरो, रांची

झारखंड के ग्यारहवें मुख्यमंत्री के रूप में रविवार को झारखंड मुक्ति मोर्चा के कार्यकारी अध्यक्ष हेमंत सोरेन शपथ लेंगे। उनके साथ कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष रामेश्वर उरांव भी शपथ लेंगे। अन्य नामों पर स्थिति स्पष्ट नहीं हुई है। अनुमान है कि खरमास के बाद मंत्रिमंडल का विस्तार होगा, जिसमें सभी नामों पर फैसला होगा। फिलहाल कांग्रेस से पांच, झामुमो से छह और राजद से एक विधायक को मंत्रिमंडल में शामिल करने के फॉर्मूले पर सहमति है। झारखंड विकास मोर्चा के तीन विधायकों और अन्य निर्दलीय विधायकों का समर्थन इस सरकार को अलग से है।

मुख्यमंत्री के रूप में हेमंत सोरेन का यह दूसरा कार्यकाल होगा। उनके अलावा बाबूलाल मरांडी, मधु कोड़ा और रघुवर दास भी एक-एक बार मुख्यमंत्री रह चुके हैं, जबकि शिबू सोरेन और अर्जुन मुंडा ने तीन-तीन बार सत्ता की बागडोर संभाली है।

फिलहाल मंत्रिमंडल को लेकर संशय बना हुआ है। कहा जा रहा है कि झामुमो से भी एक विधायक को मंत्री बनाए जाने की तैयारी है, लेकिन शनिवार देर रात तक नाम पर फैसला नहीं हो सका था।

मुझे सिर्फ अपनी जानकारी, दूसरों की नहीं : प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष रामेश्वर उरांव ने मंत्रिमंडल में कांग्रेस के सदस्यों की संख्या को लेकर पूछे गए सवाल के जवाब में कहा कि उन्हें यह जानकारी नहीं है। फैसला आलाकमान को लेना है। यहां से अनुशंसा की बात भी नहीं है। उनका दो टूक जवाब था-प्रदेश प्रभारी ने फोन पर तैयार होने की सूचना दी और इसके अलावा मुझे कुछ पता नहीं।

देश भर से जुटेंगे विपक्षी नेता : शपथ ग्रहण समारोह में पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी, कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, पी चिदंबरम, प्रियंका गांधी, अहमद पटेल, शरद पवार के साथ बंगाल, राजस्थान, मध्य प्रदेश, दिल्ली, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री शामिल होंगे। इसके अतिरिक्त कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री कुमारस्वामी, उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव, बिहार के पूर्व उप-मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव, आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू, उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत, बसपा अध्यक्ष मायावती, डीएमके अध्यक्ष एमके स्टालिन, राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश, सीपीआइ नेता कन्हैया कुमार, सांसद टीआर बालू आदि शामिल होंगे।

भगवा की जगह हरा रंग

मोरहाबादी मैदान में पूर्व के सरकारी समारोह में दिखने वाला भगवा रंग इस बार नहीं दिखेगा। अब चलन में हरा रंग है और इसी का सबसे ज्यादा इस्तेमाल शपथ ग्रहण समारोह स्थल पर हुआ है। मैदान की घेराबंदी में सफेद और हरे रंग के कपड़े का उपयोग किया गया है।

'भ्रष्टाचार मिटाएंगे, स्थानीयता और नियोजन नीति में करेंगे बदलाव'

अपने आवास में महागठबंधन के विधायक दल के नेता हेमंत सोरेन। जागरण

साक्षात्कार

झारखंड में सत्तासीन रही भाजपा को बेदखल कर मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने जा रहे हेमंत सोरेन को यह पद आसानी से नहीं मिला है। उन्होंने राज्य की जरूरतों, समस्याओं और लोगों की उम्मीदों को करीब से समझा है। चुनावी रणनीति बनाने से लेकर प्रत्याशियों का चयन करने की जिम्मेदारी उनके कंधे पर थी। वे अपने दल झारखंड मुक्ति मोर्चा के साथ-साथ कांग्रेस और राजद के भी स्टार प्रचारक थे। सधे हुए कदमों से बिना थके उन्होंने पूरे अभियान को नेतृत्व दिया और जब परिणाम सामने आया तो उस गठबंधन को बहुमत से ज्यादा विधायक मिले, जिसकी कमान हेमंत सोरेन के हाथ में है। हेमंत सोरेन को राजनीति विरासत के तौर पर मिली, लेकिन खुद को साबित करने के लिए उन्हें लंबा संघर्ष करना पड़ा है। झारखंड के लिए उनका एजेंडा स्पष्ट है जिसे वे अपने कार्यकाल के दौरान मुकाम तक पहुंचाने को उत्सुक हैं। इस बाबत **हेमंत सोरेन** से **दैनिक जागरण** के राज्य ब्यूरो प्रभारी **प्रदीप सिंह** ने विस्तार से बातचीत की। प्रस्तुत हैं बातचीत के अंश :

आप मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने जा रहे हैं। आपको इसकी बधाई और शुभकामनाएं। आपकी क्या प्राथमिकताएं होंगी?

राज्य के लिए जो आकांक्षाएं आम लोगों की है, वह हमारी भी है। इसके लिए परिणाम आने तक लगातार काम करना होगा, गतिशील रहना होगा। जहां तक आपने प्राथमिकताओं की बात की तो यह बड़ा व्यापक है। इसके लिए बड़ी सोच भी रखनी होगी। विजन के साथ काम को आगे बढ़ाना मेरा लक्ष्य है। आप देखेंगे कि हम आमलोगों की अपेक्षा पर खरा उतरने में कामयाब होंगे। सभी लोगों तक सरकार की कल्याणकारी योजनाओं और विजन का लाभ पहुंचेगा। जो तबका उपेक्षित रहा है, उनकी चिंता सरकार करेगी। भ्रष्टाचार के लिए झारखंड में कोई जगह नहीं होगी। हम लोगों का काम सबको दिखेगा। हम होर्डिंग और बैनर में चेहरा चमकाने की बजाय धरातल पर काम करके दिखाएंगे।

आपको पूर्व में भी राज्य में सरकार चलाने का मौका मिला है। तब आपका कार्यकाल काफी कम समय का था। इस बार जनादेश पांच वर्षों के लिए मिला है। कैसा लग रहा है?

हंसते हुए....आपने सही कहा, इस बार जनता ने ठोस जनादेश दिया है। अगले पांच साल इस राज्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण होंगे। हम लोगों को विश्वास दिलाते हैं कि हम देश में झारखंड की अलग पहचान कायम करेंगे। झारखंड तेजी से आगे बढ़ेगा।

आपने भाजपा सरकार के दौरान लागू की गई स्थानीयता नीति और नियोजन नीति का विरोध किया था। क्या इसे बदलने की दिशा में कार्रवाई करेंगे?

निश्चित तौर पर स्थानीयता नीति और नियोजन नीति में बदलाव करेंगे। इन नीतियों की त्रुटियों को खत्म करेंगे। सबके साथ मिलकर इस पर चर्चा करेंगे और राज्य के हित में फैसले लेंगे।

झारखंड में भाजपा की शिकस्त की अनुगूंज पूरे देश में सुनाई पड़ी। भविष्य में आप अपनी भूमिका राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भी पाते हैं?

बेशक राजनीति का दायरा सीमित नहीं किया जा सकता। आज यह काफी व्यापक है। यह जहां तक जाएगा उसी के मुताबिक कार्य करेंगे। फिलहाल झारखंड पर ही पूरा ध्यान केंद्रित है।

झारखंड मुक्ति मोर्चा ने ढेर सारे चुनावी वादे किए हैं। क्या सारे वादे धरातल पर उतरेंगे?

बिल्कुल...हमने जो भी वादा किया है, उसे हर हाल में निभाएंगे। इसके अलावा अन्य कार्य भी हम करेंगे जो पद पर बैठने के पश्चात मेरे ध्यानार्थ लाए जाएंगे। हम अपने वादे निभाने के लिए पूरी तरह से कृतसंकल्प है। आपको भरोसा दिलाते हैं कि अब कोई हमारे झारखंड में भूख से नहीं मरेगा, कोई बच्चा भात-भात चिल्लाते हुए नहीं मरेगा।

बोले वेंकैया नायडू ▶ हमें संवैधानिक तरीकों से समस्याएं हल करना सीखना होगा

'विचार-विमर्श से सुलझाएं जटिल मुद्दे'

उपराष्ट्रपति ने जेटली पर लिखी किताब का ओम बिरला के साथ किया विमोचन

जागरण ब्यूरो, नई दिल्ली

वर्तमान हालात में ज्वलंत मुद्दों को संविधान के दायरे में रहते हुए बौद्धिक विचार-विमर्श के माध्यम से सुलझाए जाने की जरूरत है। इसके लिए अरुण जेटली जैसा चरित्र, प्रतिभा और क्षमता चाहिए, जिनमें सबको साथ लेकर जटिल विषयों को भी आसानी से सुलझा लेने की अद्भुत क्षमता थी। यह बात उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू ने स्वर्गीय जेटली पर लिखी पुस्तक 'दि रेनेसां मैन : दि मेनी फेसेट्स ऑफ अरुण जेटली' का लोकसभा स्पीकर ओम बिरला के साथ विमोचन करते हुए कही।

सीएए, एनआरसी और एनपीआर को लेकर देश के विभिन्न हिस्सों में चल रहे विरोध प्रदर्शनों और हिंसक घटनाओं का जिक्र किए बगैर नायडू ने कहा कि लोकतंत्र में हिंसा के लिए कोई जगह नहीं है। ज्वलंत मुद्दों को संसद, विधानसभाओं तथा जनता के बीच चर्चाओं के माध्यम से सुलझाया जाना चाहिए। जटिल विषयों पर आपस में चर्चा करें, जनता के बीच जाकर बहस करें और फिर निर्णय जनता पर छोड़ दें। यही वक्त का तकाजा है। जाति, धर्म को हावी होने देने के बजाय हमें संवैधानिक तरीके से समस्याओं को सुलझाने की आदत डालनी चाहिए। यही अरुण जेटली को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

नई दिल्ली में शनिवार को पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण जेटली पर लिखी गई पुस्तक 'दि रेनेसांस मैन : दि मैनी फेसेट्स ऑफ अरुण जेटली' का विमोचन करते उपराष्ट्रपति एम वेंकैया नायडू (बीच में)। साथ में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला (बाएं) और अरुण जेटली की पत्नी संगीता। पीआइबी

जेटली की जयंती पर उनकी खूबियों को याद करते हुए वेंकैया ने कहा कि संसद में जब-जब जटिल मुद्दे आएंगे, तब हमें अरुण जेटली की याद आएगी। वे कठिन से कठिन मुद्दों पर भी इतने प्यार भरे तरीके से अपनी बात रखते थे कि सभी को सहमत होना पड़ता था। संसद के सेंट्रल हॉल में बड़ा जमावड़ा होता था, तो सभी समझ जाते थे कि जेटलीजी बैठे हैं। पत्रकार भी उन्हें बहुत पसंद करते थे, क्योंकि वे खबरों के स्रोत थे।

नायडू ने कहा कि वे असाधारण प्रतिभा के धनी ऐसे राजनेता थे, जो सभी के लिए सहज सुलभ थे और अपने व्यवहार से सबका दिल जीत लेते थे। पहली बार मिलने वाला भी उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था। छोटा, बड़ा जो उनके पास गया उन्होंने हमेशा सबकी मदद की। उनमें कुशल वक्ता, असाधारण संवादकर्ता तथा आदर्श सांसद के सभी गुण मौजूद थे। वे देश से प्यार करने वाले ईमानदार नेता थे और भ्रष्टाचार से उन्हें सख्त नफरत थी। नई पीढ़ी को जेटली से सीखने की जरूरत है।

नायडू ने जेटली से जुड़ी कुछ व्यक्तिगत यादें भी साझा कीं। उन्होंने कहा कि हम दोनों छात्र यूनियन लीडर थे। उनसे मेरी पहली मुलाकात जेपी आंदोलन के समय में हुई थी, जो बाद में अटल और फिर मोदी सरकार में मंत्री और राज्यसभा में सभापति बनने पर भी जारी रही। लगभग रोजाना ही विभिन्न मुद्दों पर उनसे चर्चा होती थी। वे खाने-खिलाने के बेहद शौकीन थे और ऐसी जगहों पर बैठकें आयोजित कराना पसंद करते थे, जहां बढ़िया रेस्तरां हो, ताकि मीटिंग और ईटिंग साथ-साथ हो सके। अरुण जेटली के व्यक्तित्व से मेरे बेटे हर्षवर्द्धन और बेटी दीपा वेंकट भी अछूते नहीं रहे और इसी का नतीजा है कि दोनों ने उनकी यादों को इस पुस्तक के रूप में संजोया है। कार्यक्रम में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने भी जेटली के साथ अपने अनुभवों को साझा किया।

न्यूज गैलरी

महाराष्ट्र सीएम के बंगले में ठाकरे के खिलाफ भद्दी टिप्पणी

मुंबई : महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री के सरकारी बंगले 'वर्षा' में एक दीवार पर मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे के विरोध और भाजपा के समर्थन में कुछ शब्द लिखे मिलने पर विवाद पैदा हो गया है। पूर्व मुख्यमंत्री देवेंद्र फड़नवीस ने इसे खाली कर दिया था और नए मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे अभी इस घर में आए नहीं हैं। स्थानीय समाचार चैनलों में जो लिखावट दिखाई जा रही है उसके मुताबिक बंगले की एक दीवार अंग्रेजी में लिखा है-'यूटी इज मीन', 'बीजेपी रॉक्स'। फड़नवीस ने इसे ओछी राजनीति करार दिया है।

चौटाला पिता-पुत्र को 14 दिन का फरलो

नई दिल्ली : जेबीटी (जूनियर बेसिक ट्रेंड) शिक्षक भर्ती घोटाले में दस साल की सजा काट रहे हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला और उनके बेटे अजय चौटाला को 14 दिन की फरलो मिली है। पिता-पुत्र शनिवार को तिहाड़ जेल से निकलकर घर के लिए रवाना हो गए। जेल प्रशासन ने शुक्रवार को ही इस संबंध में आदेश जारी किया था। (जासं)

उप्र में हिंदू परित्यक्त महिलाओं को पेंशन के लिए एफआइआर जरूरी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

उप्र में हिंदू परित्यक्त महिलाओं को पेंशन पाने के लिए थाने में एफआइआर दर्ज कराना जरूरी होगा। एफआइआर न होने पर थाने में दी गई तहरीर को भी पेंशन के लिए मान्य किया जा सकता है। समाज कल्याण विभाग ने पेंशन नियमावली का खाका तैयार कर लिया है। हालांकि इस पर अंतिम मुहर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ लगाएंगे।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने तीन तलाक पीड़िताओं व हिंदू परित्यक्त महिलाओं को छह हजार रुपये सालाना पेंशन देने की घोषणा की थी। इस घोषणा को अमली जामा पहनाने का काम समाज कल्याण व अल्पसंख्यक कल्याण विभाग कर रहा है। इसके लिए दोनों विभाग मिलकर नियमावली तैयार कर रहे हैं। तीन तलाक पीड़िताओं को आर्थिक सहायता के साथ ही कानूनी मदद भी दी जानी है।

हिंदू परित्यक्त महिलाओं को पेंशन देने के लिए उनकी पहचान किस तरह की जाए, यह पेंच फंसा हुआ था। इसके लिए समाज कल्याण विभाग ने नियमावली के ड्राफ्ट में हिंदू परित्यक्त महिलाओं की ओर से एफआइआर दर्ज कराये जाने या फिर थाने में लिखित शिकायत करने का प्रावधान जरूरी कर दिया है।

तीन तलाक पीड़िताओं के साथ नहीं है दिक्कत : तीन तलाक पीड़िताओं की पहचान में कोई संकट इसलिए नहीं है क्योंकि मुस्लिमों में निकाह एक तरह का करारनामा है, जबकि हिंदुओं में शादी एक पवित्र बंधन माना गया है।

जल्द कैबिनेट में आएगा प्रस्ताव

मुख्यमंत्री ने तीन तलाक पीड़िताओं व हिंदू परित्यक्त महिलाओं को छह हजार रुपये सालाना पेंशन देने की घोषणा 25 सितंबर को की थी। इस योजना को दो विभागों अल्पसंख्यक कल्याण व समाज कल्याण विभाग को मिलकर चलानी है। दोनों विभागों ने पेंशन की नियमावली का खाका तैयार कर लिया है। मुख्यमंत्री के सामने प्रजेंटेशन होना है। सीएम की हरी झंडी मिलने के बाद यह प्रस्ताव कैबिनेट में रखा जाएगा। इसके बाद हर जिले से पीड़िताओं के आवेदन-पत्र लेकर उन्हें पेंशन दी जाएगी।

अहमदाबाद-मुंबई के बीच 17 को चलेगी तेजस

नई दिल्ली, प्रेट्र : लखनऊ-दिल्ली रूट के बाद अब देश की निजी यानी कॉरपोरेट ट्रेन तेजस अहमदाबाद एवं मुंबई के बीच भी शुरू होने जा रही है। इस मार्ग पर 17 जनवरी को तेजस ट्रेन लांच होगी और 19 जनवरी से इसका व्यावसायिक परिचालन शुरू हो जाएगा। रेलवे की खानपान एवं पर्यटन शाखा इंडियन रेलवे कैटरिंग एंड टूरिज्म कॉरपोरेशन (आइआरसीटीसी) इस ट्रेन का संचालन कर रही है। अहमदाबाद-मुंबई-अहमदाबाद मार्ग पर यह ट्रेन सप्ताह में छह दिन चलेगी। पहली तेजस की तरह ही देरी से चलने पर यात्रियों को क्षतिपूर्ति का भुगतान किया जाएगा।

यह ट्रेन अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस होगी। रेलवे में एयरलाइंस जैसी सेवा उपलब्ध कराने के लक्ष्य के तहत इस ट्रेन में यात्रियों को एयरलाइंस जैसी सुविधा दी जा रही है। उच्च गुणवत्ता के भोजन और पेय पदार्थ ट्रेन में सवार यात्रियों को परोसे जाएंगे और इसकी कीमत टिकट में शामिल होगी। हर कोच में बोतल बंद पानी के साथ ही आरओ भी लगा रहेगा। यात्रियों को ट्रेन में अत्याधुनिक सुविधा मुहैया कराकर रेल मंत्रालय यात्रा को सुखद बनाने में जुटा है।

सूत्रों के अनुसार, एक घंटा से अधिक की देरी होने पर आइआरसीटीसी प्रति यात्री 100 रुपये और दो घंटे से अधिक की देरी होने पर 250 रुपये क्षतिपूर्ति देगी। इसके अलावा ट्रेन में सफर करने वाले सभी यात्रियों को आइआरसीटीसी की ओर से 25 लाख रुपये तक का मुफ्त रेल यात्रा बीमा मुहैया कराया जाएगा। इसमें यात्रा के दौरान डकैती आदि की स्थिति में एक लाख रुपये तक का कवरेज भी शामिल होगा।

तत्काल या प्रीमियम तत्काल कोटा नहीं होगा। केवल जेनरल कोटा और विदेशी पर्यटक कोटा होगा। विदेशी पर्यटक कोटे की छह सीटें एग्जिक्यूटिव क्लास में और 12 चेयर कार में होंगी।

अब रेलवे प्लेटफार्म पर चढ़ने और उतरने का देना होगा शुल्क

प्रदीप चौरसिया, मुरादाबाद

रेलवे में अब मुफ्त की कोई सुविधा नहीं मिलने वाली। यहां तक कि प्लेटफार्म पर उतरने व चढ़ने तक का शुल्क वसूला जाएगा। पायलट प्रोजेक्ट के तहत फिलहाल इसे देहरादून व चंडीगढ़ में लागू किया जाना प्रस्तावित है। यह शुल्क कितना होगा, यह अभी तय नहीं है।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) ने रेलवे की आर्थिक स्थिति को लेकर रिपोर्ट में कहा है कि 100 रुपये कमाने के लिए रेलवे 98.44 रुपये खर्च करता है। सुझाव दिया कि आंतरिक स्रोत से आय (इंटरनल रेवेन्यू) बढ़ाएं। साथ ही मुफ्त सेवा पर रोक लगाने व सभी यात्री सुविधाओं पर शुल्क लगाने का सुझाव दिया है। इसके बाद रेलवे बोर्ड व रेल मंत्रालय स्तर पर मंथन शुरू हो गया है। अभी पायलट प्रोजेक्ट के तहत कुछ स्टेशनों पर सुविधाओं में सुधार के साथ कुछ नई सुविधाएं भी शुरू होंगी। यही नहीं आप जिस स्टेशन के लिए टिकट ले रहे हैं वहां प्लेटफार्म पर उतरने और चढ़ने का शुल्क वसूलने की भी तैयारी है। यानी टिकट के साथ ही शुल्क वसूल किए जाएंगे। इससे सामान्य टिकट के साथ प्लेटफार्म टिकट की भी कीमत बढ़ जाएगी। किराया क्या होगा, अभी यह तय नहीं किया गया है।

हार्दिक पटेल को कांग्रेस देगी बड़ी जिम्मेदारी

राज्य ब्यूरो, अहमदाबाद : गुजरात कांग्रेस अपने जंबो संगठन व निष्क्रिय नेताओं को हटाकर 80 सक्रिय सदस्यों को प्रदेश संगठन में शामिल करेगी। अध्यक्ष पद पर अमित चावडा बने रहेंगे और युवा नेता हार्दिक पटेल को कांग्रेस बड़ी जिम्मेदारी दी जा सकती है। भाजपा के पाटीदार वोट बैंक में सेंध लगाने के लिए कांग्रेस हार्दिक का कार्ड खेल सकती है ताकि 2022 के विधानसभा चुनाव तक मजबूत युवा टीम तैयार की जा सके। नए संगठन में निष्क्रिय नेताओं को दरकिनार कर 80 सक्रिय सदस्यों का ही संगठन बनाया जाएगा। छह सीटों पर कराए गए उपचुनाव में चावडा के नेतृत्व में तीन सीट जीतने के बाद पार्टी में उत्साह दिखाई दे रहा है।

शनिवार को कांग्रेस के 135वें स्थापना दिवस पर पार्टी के प्रदेश प्रभारी राजीव सातव, अध्यक्ष अमित चावडा ने नेता विपक्ष परेश धनाणी, पूर्व अध्यक्ष सिद्धार्थ पटेल व सैकड़ों कार्यकर्ताओं के साथ गांधी आश्रम पर ध्वज लहराया और उसके बाद संविधान बचाओ, देश बचाओ के नारे लगाते हुए वहां से कूच किया। सातव ने भाजपा पर किसान, युवा व महिलाओं की उपेक्षा का आरोप लगाते हुए कहा कि सरकार के 25 साल के कार्यकाल में 11 बार प्रतियोगिता परीक्षाएं रद करनी पड़ी।

कम हुई तल्खी

बंगाल सरकार व राज्यपाल के तल्ख रिश्ते में दिखी थोड़ी नरमी, धनखड़ ने कहा-लोकतंत्र में एकजुटता से बढ़ना होगा आगे, विश्वविद्यालयों पर चर्चा को लेकर पत्र लिख सीएम से मांगा था समय

ममता ने 24 घंटे में दिया जवाब तो खुश हुए धनखड़

जागरण संवाददाता, कोलकाता

बंगाल सरकार व राज्यपाल के तल्ख रिश्ते में शनिवार को तब थोड़ी नरमी देखने को मिली, जब राज्यपाल जगदीप धनखड़ ने मुख्यमंत्री ममता बनर्जी से मुलाकात के लिए लिखे गए पत्र का जवाब 24 घंटे के भीतर मिलने पर प्रसन्नता जाहिर की। राज्यपाल ने कहा- 'लोकतंत्र में एकजुटता के साथ हमें आगे बढ़ना होगा। मुख्यमंत्री से राजकीय सहायता प्राप्त विश्वविद्यालयों की स्थिति पर चर्चा को लेकर मुलाकात के लिए लिखे पत्र का जवाब मिलना दर्शाता है कि शिक्षा के परिदृश्य में सुधार के प्रति मेरे प्रयासों का असर दिखने लगा है।'

उल्लेखनीय है कि इससे पहले भी राज्यपाल मुख्यमंत्री से मुलाकात को लेकर पत्र लिख चुके हैं, जिसका कोई जवाब नहीं आया था। गत 25 दिसंबर को राज्यपाल ने विश्वविद्यालयों पर चर्चा के लिए एक बार फिर मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर उनसे मुलाकात करने की इच्छा जताई थी। इसका जवाब मुख्यमंत्री की ओर से 26 दिसंबर को ही राजभवन भेज दिया गया, जिसमें कहा गया है कि चूंकि यह मामला शिक्षा विभाग के अंतर्गत पड़ता है इसलिए शिक्षा मंत्री पार्थ चटर्जी को मामला अग्रसारित किया गया है ताकि वे समयानुसार आपसे (राज्यपाल) मुलाकात करें।

जगदीप धनखड़ फाइल फोटो

गौरतलब है कि गत 24 दिसंबर को राज्यपाल जब जादवपुर विश्वविद्यालय के दीक्षा समारोह में शामिल होने पहुंचे थे तो कुछ छात्रों ने उनका रास्ता रोक दिया था और 'गो बैक' के नारे लगाए थे। राज्यपाल ने सीएमओ से प्राप्त पत्र को ट्वीट करते हुए लिखा है,-मैंने 25 दिसंबर को मुख्यमंत्री को पत्र लिखा था, जिसका जवाब उन्होंने 26 दिसंबर को देते हुए कहा कि चूंकि सरकारी शैक्षणिक संस्थानों का मामला मेरे अधीन नहीं पड़ता, इसलिए इस बाबत शिक्षा मंत्री आप से सभी मुद्दों पर चर्चा करेंगे। राज्यपाल ने कहा कि मैं मुलाकात का इंतजार कर रहा हूं, क्योंकि लोकतंत्र में हमें एकजुटता से आगे बढ़ना होगा।'

पहले जमा होगी रिपोर्ट, फिर होगी मुलाकात : पार्थ : शिक्षा मंत्री पार्थ चटर्जी ने शनिवार को इस मामले पर पत्रकारों के सवाल का जवाब देते हुए कहा कि पहले उच्च शिक्षा विभाग की ओर से राज्यपाल के सवाल का जवाब दिया जाएगा, फिर वे उनसे सोमवार अथवा मंगलवार को मुलाकात कर सकते हैं, जो कि सहूलियत के हिसाब से तय होगी। पार्थ ने राज्यपाल द्वारा मुख्यमंत्री की चिट्ठी को ट्वीटर पर साझा करने पर सवाल करते हुए कहा कि गोपनीय चिट्ठी सार्वजनिक पटल पर नहीं आनी चाहिए थी।

मप्र में राजनीतिक नियुक्तियों पर कांग्रेस में बवाल, बाबरिया बिफरे

नईदुनिया, भोपाल : मध्य प्रदेश में राजनीतिक नियुक्तियों को लेकर कांग्रेस में बवाल मचा हुआ है। ऐसे में पार्टी के महासचिव और प्रदेश प्रभारी दीपक बाबरिया बिफर गए हैं। वह खुलकर बयान दे रहे हैं। उनका कहना है कि संगठन के लिए लंबे समय से सक्रिय लोगों को नजरअंदाज किया जा रहा है। वहीं, प्रदेश कांग्रेस के पदाधिकारियों का कहना है कि एआइसीसी (अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी) के पदाधिकारियों का काम संगठन में समन्वय का होता है। मुख्यमंत्री किसी के सुझाव या अपने विवेक पर किसी भी अशासकीय सदस्य को नियुक्ति दे सकते हैं।

मध्य प्रदेश में कांग्रेस की कमलनाथ सरकार ने अब तक करीब दस अशासकीय सदस्यों की सहकारिता क्षेत्र में राजनीतिक नियुक्तियां की हैं। इनमें ग्वालियर के कांग्रेस नेता अशोक सिंह की मध्य प्रदेश राज्य सहकारी बैंक के प्रशासक के रूप में अशासकीय नियुक्ति सबसे अहम है।

कह के रहेंगे माधव जोशी